# ।। प्रेम लछ भक्ति के अंग ।।
# मारवाडी + हिन्दी
# ( १–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुओ,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

## || अथ प्रेम लछ भक्ति के अंग का अनुवाद प्रारम्भ ||

|| कवित्त ||

प्रेम भक्त लछ अेहे । प्रीत सतगुरु सु लागी ||
नाँव रटे निरधार । नेम क्रिया सब भागी ||
बिरह तलब ऊर मांय । लाज संका नही आंवे ||
गद गद होय सरीर । मुन उँचे सुर गावे ||
पलक राम नही बिसरे । तलफत अे निस जाय ||
प्रेम भक्त सुखराम कहे । अे लछण ताँ कुवाँय ||१||

परापरीसे दो पद है । एक बैरागी सतस्वरुप सतगुरु का पद व दुसरा माता पिता का पद । जगत में माया ब्रम्हकी अनेक प्रकारकी भक्तियाँ हैं। उन सभी भक्तियों के फल कालके मुखसे मुक्त न करके मायाका सुख देकर कालके मुखमें ही रखनेवाले हैं। यह फल संतोको मनसे व तनसे हट करके प्राप्त करते आता । बैरागी सतस्वरुपका देश विशाल अनंत सुखोंका भंडार है । वहाँ पहूँचने के लिए एकही प्रकारकी भक्ति है । उस भक्ति का फल कालके मुखसे मुक्त कराके मायाके सुख के पर सतस्वरुपके सुखमें ले जानेवाले है । वह फल संतोको मनसे व तनसे हट करके कभी भी प्राप्त करते आता नही । यह फल संतोके प्राणको सतस्वरुप सतगुरुसे प्रेम होनेसे ही प्राप्त करते आता । ऐसे जिन संतोको सतगुरुसे प्रीति लगी हुयी है । उन्हे प्रेमभक्त कहते है । उस प्रेमभक्तमें भक्ति को लगनेसे जो स्वभाव व लक्षण आते उसके वर्णन आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने प्रेमभक्ति के अंग में किया है । जिस संतो की प्रीति सतगुरुसे लगी हुयी रहती व संत सतगुरुको नामस्मरुप परमात्मा समझता और किसी भी मायाका आधार न लेते सतगुरुही नाम परमात्मा है ऐसे प्रेमप्रितिसे अपने हंसके उरसे समझके सतगुरुने बताया हुआ नाम रटता । इस संतमे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति,अवतार आदी त्रिगुणी मायाके भक्तोंके नुसार कर्म,क्रिया,नियम उनके निजमनसे मिट गये रहते । इस संतोके घटमें नाम परमात्मा प्रगट होने के लिए जबर विरह तलब लगी हुई रहती । ऐसे साहेबको चाहनेवाले संतोको जगतकी कोई भी लाज मर्यादा नही रहती । उनको साहेबका नाम रटते समय मायामें उलझा हुवा जग क्या समझेगा और क्या कहेगा व निंदा करेंगे की महिमा करेंगे इसका जरासा भी भान रहता नही । इन संतोको सतगुरुसे प्रीति करते समय साहेबका नाम रटते समय किसीका भी संकोच रहता नही । उनका शरीर साहेब प्राप्ती के लिए प्रेमसे गदगद हुआ रहता । ऐसे गदगद हुअे प्रेममें अपने आपही कभी मौन धारण करके रहता तो कभी भान न होनेके कारण जोर जोरसे सतगुरुकी महिमा गाता । वह रामको एक पल भी भुलता नहीं। वह घटमें नाम प्राप्त करने के लिए रातदिन तडपता रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते, ऐसे ऐसे प्रकारके लक्षण प्रेमी भक्तमें प्रगट होते हैं।||१||

भुल गयो घर बार । मन की सुध न कांई ।
गया अंग सब छुट । सुरत मन माँय मिलाई ।।
रहे ऊदासी जोर । साध द्रसन मन चावे ।।
ओर सकल बिध छांड । राम सतगुरु मन भावे ।।
लिव लागे तूटे नही । ऊठ बैठ कर काम ।
प्रेम भक्त सुखराम केहे । वा बगसी सतराम ।।२।।

यें भक्त घरबार याने माता,पिता,पत्नी,पुत्र,पुत्री,सगे संबंधी भुल जाते। सतगुरुसे हुअे हुवे प्रीतिसे इन भक्तोंके मनमें घरबार जगत की सुध नहीं रहती। उनके माता,पिता,पत्नी, पुत्र,पुत्री,परिवार इनमें रहे मोह ममताके सभी स्वभाव छुट जाते व उनकी सुरत व मन सतगुरुने दिये हुअे नाममें गरक हो जाते ।उनके मनमें बैराग्य आया हुआ रहता औंर जन्मसे लेकर मृत्युतक भोगते आये हुए यमके दु:खोसे संसारके मोह ममता में रहकर जीनेकी उदासी आयी हुई रहती । इस यमके सदा होनेवाले जाँचसे निकले हुये साधू संत की संगतीकी सदा मनमें चाहना रहती । ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती,अवतार और अन्य देवोंकी विधियाँ करके नाशवान सुख मिलनेकी चाहना मनसे उठ जाती । व जिससे यह सभी देवताओंकी विधियाँ छोड देता व उनके मनको सिर्फ सतगुरु व रामनाम ही भाता । उनकी सतगुरुसे और रामनामसे अखंडित लीव लगी हुई रहती । यह लीव उठते बैठते या काम करते समय कितना भी व्यस्त रहा तो भी जरासी भी तुटती नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की,भक्तको भी खंड न होनेवाली अखंडित लीव रामजीने सतगुरुसे हुअे हुवे प्रीतिके कारण बक्षिस दी हुई रहती ।।२।।

रूम रूम थर राय । बेण बायक ऊर लागे ।।
काँपे सकळ सरीर । भ्रम दुबध्या सब भागे ।।
अक बक बेण विचार । मन नाचे तन मांहि ।।
सांस अमांऊ नाभ । बंक पिछम दिस वांहि ।।
सुरत सबद मन अेकठा । हंसे पलक कब रोय ।।
अे लछण सुखराम के । प्रेम भक्त ज्हाँ होय ।।३।।

सतगुरुसे ज्ञान सुननेसे ऐसे संतके रोम रोम थर थर कापते है । सतगुरुका ज्ञान उसके हृदयमें जाके लगता । उस ज्ञान के कारण संतके सभी भ्रम मिट जाते है । व सत परमात्मा क्या असत माया क्या है,यह उसे समझने के कारण उसकी सत असतकी दुविधा सदा के लिए मिट जाती है । उसे सतगुरुसे प्रगट हुअे हुऐ अकबक प्रेम के कारण सतगुरुसे बोलते समय भान रहता नहीं। बोलनेका एक रहता व बोल दुसराही देता है । ऐसी स्थिती उसमें प्रगटती है । उसका उर सतगुरुके प्रेममें अकबक हुआ रहता । इसकारण उसका मन आनंदसे फुलकर तनमें नाचते रहता । श्वासोच्छ्वासमें रामनाम लेते

समय नाभीमें उसका श्वास समाता नही । उस न समाते हुये श्वासके रेटा उसकी पाच आत्मा उसके ब्रम्ह हंससे अलग होती व हंस साहेबके देशको जानेके लिए बंकनालके दिशासे जाने लगता । उसे मन,सुरत शब्द व श्वास एकसाथ होने के कारण आनंद आता व वह संत इस भक्तीयोगसे साहेब मिलेंगे ही इस आनंदसे कभी हसता तो साहेब मिलने के लिए मोहमायासे विलंब हो रहा इसकारण रोता है । इसप्रकार कभी हसता तो कभी रोता ऐसे लक्षण प्रेमभक्तके घटमें उपजते है । ऐसा आदि सतगुरुसुखरामजी महाराजने कहा ।।।३।।

हर के रग रग रूम । जगत लागे सब खारो ।।
डब डब नेणा नीर । नाँव लागे अत प्यारो ।।
कुड उठे दिल माय । लेहर ठंडी ब्हो आवे ।।
भरमे चित्त ज्यु मन । राम खायो मुख गावे ।।
ने:चल थिर मन ना रहे । पलक खिण होय उदास ।।
प्रेम भक्त सुखराम क्हे । यह लछण ज्हाँ बांस ।।४।।

घटमें परमात्मा प्रगट होगा इस आनंदसे इस संतकी नाडी–नाडी,रोम–रोम हर्षित होते रहते व उसे मोह मायासे भरा हुआ सभी जगत खारा,कड्वा व झूठा लगते रहता । उसकी आँखे आसुओंसे डबडब होकर बहने लगती है । व उनके हृहदको रामनाम अति प्रिय लगते रहता । परमात्मा की प्राप्ती के लिये उनके हृदयमें कुड उठते व उसके देहमें थंडी लहरे उठती । कभी कभी उसका चितमन राम मिलेंगे ही नहीं इस शंकासे भ्रमीत हो जाता । वह घटमें राम जल्दी से जल्दी मिले इसलिए जल्दी जल्दीसे रामनाम मुखसें भजने लगता । जबतक राम घटमें प्रगट होता नही तबतक उसका मन स्थिर रहता नही । पलपलमें खिन्न होकर उदास होकर रहता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ऐसे ऐसे लक्षण प्रेमभक्त के मनमें,प्राणमें घटमें प्रगटते हैं।।।४।।

बिरह उठे मन माँय । क्रम न्यारा सब दिसे ।।
सुणिया नाव ऊपाय । दांत जँवरे सिर पीसे ।।
सुरातन अंग जोर । ऊंध आलस नहीं आवे ।।
साहिब को दीदार । खांत कर सुद बुद लावे ।।
जात पात कुळ ना गिणे । सुण साहिब के लेण ।।
प्रेम भक्त सुखराम केहे । ज्यां इम्रत मुख बेण ।।५।।

उसके मनमें विरह उत्पन्न होता व अपने किये हुअे सभी कालरुपी कर्म उसे अलग अलग दिखने लगते । किये हुये काल कर्मोपर नामका उपाय है । ऐसा सुनकर वह संत यम कर्मोपर दात खाकर उन्हे नष्ट करने के लिए जाता । उनके शरीरमें शूरवीरपनाका जोर आया हुआ रहता । वह नामका कर्म काटनेका उपाय करने मैं आलस करता नहीं। उसके

शरीर में आलस व निंदा बिलकुल भी रहती नहीं। वह मेहनत कर करके अपनी सुध्दि व बुध्दि साहेबके दर्शन की तरफ लगा देता । वह साहेब पाने के लिए जात पात व कुल इसका विचार करता नही । वह अपनेसे नीच घरमे साहेब की संगत रही तो वहाँ संगत करने जाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसा वह प्रेमभक्त मुखसे अमृतके समान वचन बोलता ।।।५।।

खान अर पान बिचार सब बिसरे । राग अर धेक को खोज जावे ।।
होय लवलिन आधीन भगवान सो । एक क्रतार निर्धार गावे ।।
करत अल्लाप कल्लाप हर काज रे । तांव सिर स्हेत हे सरब सारा ।।
ग्यान मेंबात बिचार सो सांभळे । नेण में निर चँवे छूट धारा ।।
राम हि राम रग रूम पूकार हे । हरष ऊर माँय दिल प्रेम भारी ।।
दास सुखराम कहे प्रेम जहाँ असल हे । अंग अे मिलत ज्युं रीत सारी ।।६।।

वह खाना,पिना व दुसरे सभी व्यवहार भुल जाता । उसे किसीसे मोह या द्वेष नहीं रहता । वह सतगुरुसे लवलीन होकर भगवानके अधिन हुआ रहता । वह कर्तारका निर्धार कर भजन करता । वह कर्तार रामजी पाने के लिए तलमलता व रामजीकी पुकार करता । अपने शिरपर मनके, तनके व आ-आकर पड्नेवाले सभी तरहके ताप सहन करता । सतगुरु व संतोसे ज्ञानकी बाते व विचार सुनता । जब ज्ञानी की बाते सुनता तब उसकी आँखोसे आसु बहने लगते । रामनाम लेते समय जब उसकी नाडी नाडी व बाल बाल राम ही राम पुकारने लगते तब उसके हृदयमें भारी हर्ष आता व मनमें भारी प्रेम आता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते जिस भक्तको सतगुरुसे अस्सल प्रेम है उसमें यह स्वभाव व यह सभी रीति मिलती है ।।।६।।

ऊठीयो प्रेम पाखंड सब छूट ग्या । पीव मो जीव सो जाय लागो ।।
मात अर तात कुळ लाज सब लोक की । बात बिचार जो भ्रम भागो ।।
चाय ज्यूँ पिव की दिल भारी लगी । धाबियाँ जोय नहिं रहत छाने ।।
हाल ज्यूँ चाल देहे नेण में पारखा । मुख सुं बोलियाँ जक्त जाणे ।।
गिल गिले कंठ दिल गीर उदास रे । सपने जीव सुख जाय माणे ।।
अब नहिं बिसरे रात दिन बिचरे । कब लूं सुख यूं मन जाणे ।।
दास सुखराम कोऊ पीव मेळा करे । ताय कूं मन अर सीस दीने ।।
अनन्त हि जनम को बिछडयों जीव हे । मोय ऊपकार कोई आण कीजे ।।७।।

जब प्रेमी भक्तमें अस्सल प्रेम उठता तब प्रेमी भक्तके सभी पाखंड याने आजतक के मालिकमें न जाकर मिलने के धारन किये हुअे सभी ज्ञान,ध्यान,कर्मकांड छुट जाते और वह प्रेमभक्त मालीकका जप करके मालिकमें जाकर मिलता । जैसे जब स्त्रीका मन पति में लगता तब वह माँ बाप की,कुलकी व अन्य सभी लोगोकी लाज रखती नहीं और पति

के प्रेममें बाधा आयेगी ऐसी कोईभी बात विचार या भ्रम उत्पन्न होने नहीं देती । व ऐसी कौनसी भी बात उत्पन्न हुई तो उस विचार बात या भ्रमको भगा देती । जब स्त्रीके मनमें पतिकी चाहना लगती तब उस स्त्रीने पतिकी चाहना रुकाकर दबा रखी हो तो भी उसमें प्रगट हुई चाहना छुपी हुई नहीं रहती । उस स्त्रीकी हलचलसे आँखोसे उसे पतिकी चाहना लगने की परीक्षा जगत के लोगोको हो जाते रहती । वैसे ही रामजीसे प्रेम लगे हुअे भक्तकी परीक्षा जगत को होते रहती । उनके कंठसे रामजीको चाहनेकी गलगली याने रोने सरीखी वाणी निकलती रहती । जैसे जीव एखाद वस्तु प्राप्त होने की खटपट करता व वह वस्तु पाने के पहलेही पाने के बाद कैसा सुख लेगा यह स्वप्न रुपसे देखते रहता । उसीप्रकार रामजी मिलने पर जो सुख होगा वे स्वप्न जैसी अवस्थामें जाकर वह प्रेमभक्त सुख भोगते रहता। जैसे पतिव्रता स्त्री पतिको रातदिन भुलती नहीं। उसीप्रकार वह रात दिन नाम भुलता नहीं व मनमें जैसे स्त्री पतिका सुख कब भोगेगी इसकारण तलमलती (तड्पती)उसीप्रकार रामजीका सुख मैं कब भोगुंगा इसलिए तलमलता(तड्पता)आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,वह भक्त रामजीको जो मुझे मिला देगा उसे मैं मेरा मन व मस्तक दुँगा । ऐसा मनमें समझता । वह मेरा यह जीव अनंत जन्मोसे रामजीसे बिछ्डा हुवा है ऐसा समजकर उस रामजीको वापीस भेट का देनेका उपकार किसीने तो भी मुझपर करना ऐसीचाहना करता ।।।७।।

धिन्न जो धिन्न गुरूदेव कूं कहत हे । तन अर मन रग रूम सारा ।।
आप क्रतार और बसो राम हे । सच्च अवगत गुरूदेव म्हांरा ।।
पलक दिदार कुं सुरत नहिं बिसरे । करत प्रणाम सुण निंद माँहि ।।
नाँव गुरूदेवमें सुरत मेमंत हे । सपना सेंग बिलाय जाँही ।।
देहे सूं देहे गुरुदेव सूं मिलत हे । ताँ दिना सुध कुछ बुध असे ।।
दास सुखराम क्हे करत प्रणाम रे । बेण सो कित्त का कित केसे ।।८।।

वह मालिकसे भेट करा देनेवाले अपने गुरुदेवको रोम रोममेसे शरीरसे व मनसे धन्य है,धन्य है ऐसे समझते रहता। अपने गुरुदेवको आपही सच्चे कर्तार,राम,आरब,अविगत है ऐसे जानता। उसकी सुरत गुरुदेवके मूर्तिसे एक पलभर भी अलग होती नहीं। वह निंदमें भी याने स्वप्नमें भी गुरुका प्रणाम करते रहता । उसकी सुरत गुरुदेवने दिये हुअे नाममें मस्त होकर रहती।(सपना सेंग विलाय जाँही)जिस समय वह देहसे सतगुरुसे आमने सामने मिलता उस समय वह अपनी सभी सुध्द बुध्द याने भान भुल जाता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की,वह देहभान स्थितीमें सतगुरुको प्रणाम करने लगता व सतगुरुसे भान भुलने के कारण मुखसे वचन कहाँ के कहाँ(कही के कही)ऐसेविसंगत बोलने लगता ।।।८।।

दुध ऊफाण ज्यूँ मन ओ ऊफणे । तरंग सो भांग की लहेर आवे ।।

जीव सो जाय अस्मान में घर करे । ता दिन धिन्न मुज भाग कुवावे ॥
प्रेम का बाण तन माँय अे निसरे । काँप्या क्रम सो पाप सारा ॥
ऊतरी गंग आकाश सूं धरण ने । निर बेहे चालीयो सेंस धारा ॥
धरण पयाँळ लग जाय जळ पूँतियों ॥ सबद अंकूर सो ऊलट ऊगा ॥
दास सुखराम के साँत पुड फोडके ॥ ईक बीस कूं ढाय घर आद पुगा ॥९॥

दुध उबलता और उतू जाता उसप्रकार उसका मन मालिक के प्रेममें उतू(उफलने)लगता । उसका मन समंदरके लहरो जैसा उफानता(उचलता)। भांग लेनेके बाद नशेकी जैसी लहरे उत्पन्न होती है वैसी उसके मनमें लहरे उत्पन्न होती है। उसका जीव अस्मानमें याने दसवेद्वारमें जाकर घर करता जब उसे मेरा भाग्य धन्य हुआ है ऐसा लगता । उसके घटसे रामजीमें लगे हुअे प्रेमके बाण निकलते रहते। वे प्रेमके बाण लगकर सभी कर्म व सभी पाप डरकर कापने लगते व भाग जाते। गंगा आकाशसे धरतीपर कैसे उतरती व जमीनपर उसका पानी हजारो धारासें बहता व जमिनके अंदर पाताल तक पहूँचता । उस पानीके कारण जमीनमें डाला हुआ बीज उगता उसीप्रकार प्रेमभक्तको रामनामसे नाडी–नाडी व केस केससे प्रेम होता । उस प्रेमके कारण रामनाम शब्द उसके हृदयमें उगता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,हंसमें प्रगट हुआ शब्द कंठ,हृदय,मध्य,नाभी, ब्रम्हास्थान,गुदाघाट व बंकनाल ऐसे सातपुड फोड्के पिठके मणीको फोड्ता याने पिठले इक्कीस स्वर्गको,पार करता । व प्रेमभक्त आदी घर पहुँचता ।॥९॥

ग्यान को बाण तन माय गरकाब होय । मन तब धुज ऊर माँय आवे ॥
पवण कुं सुरत मिल चित्त सो आ पडे ॥ प्रेम की लेहर पाताल जावे ॥
गिल गिली होत नख चख के बिच में । धुज बेराट तिहुँ लोक सारा ॥
हल हले होय जो नाभ मे पाँच रे । सबद चहुँ दिस होय सेंस धारा ॥
लछ अनेक ऊपाय सो साजना ॥ गेब षट ध्रम की रीत आणी ॥
दास सुखराम के बंद दे तीन रे । ऊलट अस्मान कूं चढ्यों प्राणी ॥१०॥

उसके घटमें सतगुरुके ज्ञानके बाण गहरे गड गये और उस ज्ञान बाणोके कारण मायामें लगा हुआ मन धुजने लगा। उसका मन सतगुरुके ज्ञानमें उलटकर लग गया। उसीप्रकार उसका श्वास,सुरत व चित्त मनको आकर मिल गये। उसके घटमें प्रेम आकर उबकने (उतु)लगा। वह इस प्रेमकी लहरे पातालतक पहुँचने लगी । उसके शरीरमें नखसे लेकर चखतक गुदगुदी होने लगी । उसके पिंड्मेंका सब बैराट व तिनों लोक धुजने लगते । नाभी में पाँचो इंद्रियोकी काया हंससे हलहल करते अलग हो गयी व शब्द चहु दिशासे हजार धारासे प्रगट हुआ। अनेक लक्षण उपाय साधना कुद्रत प्रगट हुये(गेब षट धर्म की रीत आणी)आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,आस्मानको जाते वक्त उसे जालंद्री,

उत्तान व त्राटक ऐसे बंद लगे । वे सभी बंद रामनामके पराक्रमसे टूटकर खुल्ले हुये व प्राण आकाशमें दसवेद्वारमें पहुँचा ।।।१०।।

होय मंमकार ररंकार सो अंग मे । रूम सब राम सो राम बोले ।।
नाद गर्णाट असमान में धुर रहयो । सुरत सो सबद मिल कंवळ खोले ।
संख की नाळ होय धस पाताळ में । कंवळ अष्ट छेद कर सेस साया ।
ऊपजो लेहेर मन जोर सो काँपियो । डरपीयो जीव भव अंत आया ।।
जाण पाताळ सो समंद मे न्हाकियो । वार कुछ पार सो नाहि सूझे ।।
रित बिचार सो विध बिलायगी । भरमियो चित सो संत बूझे ।।११।।

उसके पूर्ण देहमें ररंकार व ममंकारकी ध्वनि हो गयी व केस केस रामराम बोलने लगा । ररंकार इस नादका गर्णाट आकाशमें घोरने लगा । शब्द,सुरत,मन व साँस मिलके दसवेद्वारके मार्गमें लगनेवाले कमल खुलने लगे । संखनालके सभी कमल छेदन करके हंस पातालमें पहूँचा । जैसे कोई अथांग समुद्रमें गिरता व उसे उस समुद्रका वारपार आता नही व जीव बचाने के लिए कुछ सुझता भी नही तब अपने देहका अंत होगा । इस डरसे उसके जैसे मन व जीव भयभीत होते । उसीप्रकार हंस पातालमें के समुद्रमें गिरने के बाद उसके मनमें व जीवमें डरने की लहर उत्पन्न होती व उसका मन जोर जोरसे कापने लगता । डरे हुये हंसको पातालमें समंदरका वारपार न लगने के कारण उसे समुद्रमेसे निकलनेका मार्ग भी सुझता नहीं। उसे वहाँ समंदरसे पार होने की रीत व विधी नष्ट हुई ऐसा लगता । उसकारण उसका चित्त समंदरसे पार होनेकी चिंतासे भ्रमीत हो जाता । इसलिए हंस घटमें साथमें चलनेवाले संत सतगुरुको पार होने की रीत पुछने लगा ।।।११।।

अेक सो रात मे अवाज आ निसरी । ध्यान धर सबद कुं जोय मांहि ।।
प्याँळ के देस मे सेस ज्युं बिलंबियो । भजन कर सोच तूँ रख नाँहि ।।
उलटियो सबद तब सेर सब धुजियो । बंकडी नाळ की पोळ खुली ।।
सूरत सो जाय पाताळ सूं ऊबकी । पिछम के घाट दिस आण झूली ।।
सुरग ईकीस कबाण गत घेरीयो । सबद हुल्लास सूं पीठ फाटे ।।
सुरवाँ संत ब्हों भाँत कर जूँझीया । ताँ दिन निसऱ्या मेर घाटे ।।
जाय असमान आकास में बिराजिया । ताँ दिना सुख ब्हो चेण आया ।।
दास सुखराम क्हे त्रगुटि स्हेर मे । तिन त्रिलोक सिर राम पाया ।।१२।।

एक रात ध्यान लगाकर बैठा था अंदरसे शब्दको देख ऐसा गेबाऊ आवाज आया । पातालके देशमें बंकनालके मुखको शेष मुखमें लेकर चिपका हुआ था । तब आवाज आया की,तू राम राम भज व तू चित्तमें आगे जानेकी कोई भी चिंता ला मत । रामनाम करनेसे संखनालसे उतरा हुआ शब्द बंकनालके रास्तेसे उलटा तब देहरुपी शहर सभी धुजने लगा । बंकनालका दरवाजा खुला पातालमें गई हुई सुरत उपर पश्चिम घाटसे झुलने लगी ।आगे

हंस स्वर्ग को पहुँचा तब इक्कीस स्वर्गके देवताओंने मुझे कमानी सरीखा घेरा देकर घेर लिया । शब्दके हुल्लाससे पिठ फटने लगी । इन देवताओंसे मैं शूरवीरतासे अलग अलग हिकमतसे रात दिन लढाई की तब स्वर्ग पार हुआ और आगे वैसेही शूरवीरतासे लडाई करते मैं यमराजाके मेरुके घाट में पहूँचा । आगे मैं आकाशमें त्रिगुटी शहरमें जाकर बैठा । तब मुझे शब्दोका बहुत सुख चेन हुआ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,वहाँ मुझे तिन लोगोंके सिरपर रहनेवाला नाथ राम प्राप्त हुआ ।।।१२।।

ध्यान असमान आकास मे लागियो । सुरत जो मनवाँ जाय बेठा ।।
त्रगुटी सेर मे नाद घण घोर हे । आद अस्थान में आण पेठा ।।
खचियां नेण सो ऊलट पट लागीया । देहे अस्मान बिच जाय ऊँची ।।
सुरत अर सबद को मेल ज्हाँ बिछडे । ताही अस्थान लग जाय पूंचि ।।
चंद अर सूर दिन रात की गम नहीं । नाद अनहद सुण रेत लारा ।।
दास सुखराम क्हे खोल खिडकी धस्याँ ।ब्रह्म ओ जीव ही होय प्यारा ।।१३।।

फिर मेरा ध्यान आकाशमें त्रिगुटी में लगा । वहाँ सुरत व मन जाकर बैठा । त्रिगुटी शहर में शब्दका घनघोर नाद बजता। मैं आदि जिस जगहसे माँ के गर्भमें आया था,उस आदस्थान भृगुटीमें याने त्रिगुटीमें जाकर बैठा । वहाँ मेरी आँखे उपर खिंची गयी व आँखे पलटकर पट लग गये। तब देहमें के अस्मानमें उपर जाने लगा। जिस जगह सुरत व शब्दकी वियोग होता उस स्थानपर जाकर पहूँचा। वहाँ चाँद और सूरज,दिन व रात इसकी कुछ जानकारी नहीं रहती। वहाँके दिनरात बिना चाँद व सूर्यसे एक सरीखे प्रकाशीत रहते। वहाँ नाद,अनहद व जिंग ध्वनि पहुँचती नहीं। इस मायाकी नाद अनहद जिंग ध्वनि पिछे ही रह जाती है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जब दसवेद्वारकी खिड्की खोलकर अंदर गया तब मेरा ब्रम्हजीव मन व आत्मासे जखडे हुये मायासे मुक्त होकर कोरा ब्रम्ह बन गया ।। १३।।

|| सवैया इन्दव छन्द ||

लाय सो काम खुद्दा घट आवे । मेघ सो बेत बिचार न आणे ।।
तिरषा नीर कहा सर कुवो । रिण मे जात न पाँत पिछाणे ।।
गांव मे भिड गहे दिल आरत । मरत मोहनी कारण टाणे ।।
प्रेम का लछ कहे सुखदेवजी । सो लाज न नेम नाहिं पुळ जाणे ।।१४।।

जब आग लगती जब उस आगको बुझाने को कोई मुहूर्त नहीं देखता वैसाही काम उत्पन्न होनेपर काम भोग के लिए तथा भुख लगने पे खाना खाने के लिए कोई मुहुर्त देखता नही । खेती के लिए बारीश आती तब अच्छा या बुरे मुहूर्तमें बारीश आयेगी इसका विचार कोई लाता नहीं। प्यास लगी तो पानी सरोबरका रहो या कुँअेंका रहो प्यास मिटाने के लिए कोई विचार लाता नहीं। रणमें लढाई करते समय जात का या पातका कोई पहचान करता

नही । गाँवोको संकट आनेपर या मनमें किसी की जरुरत पड्नेपर कोई किसी का कारण रखता नहीं। मरते समय मरनेवाला किसेसे भी मोह रखनेवाला कारण रखता नहीं। इसीप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते साहेब प्रगट करा देनेवाले सतगुरुसे प्रेम आया यानो कुल परिवार व जगतकी किसीकी भी लाज रखते नहीं। कुल समाजकी मर्यादा रखनेके नियम रखते नहीं व वैसेही मुहुर्त देखते नहीं।।१४।।

बार चढे डर गाँव ऊचाळे । चोर कुं मारत पुळ न जोवे ।।
सती के नेम नहिं दिन कारण । आण कहे तब ही संग होवे ।।
रण सु भाग गेहे घर ओटो । पुळ सो बेत कछु नहि जोवे ।।
नाँव सूं प्रेम लग्या सुखदेव कहे । लाज मरजाद कछु नहि होवे ।।१५।।

जब बार चढती याने चोरी करनेवाले या लुटेरोंके पिछे गाँवका जहागीरदार चढाई करके जाता उसे बार चढी ऐसा कहते। बार चढने में मुहुर्त देखते नहीं। उसीप्रकार चोर डरके भाग जाता वह भागने के लिए मुहुर्त देखता नहीं। उचाले याने गाँव छोड्कर लोग भाग जाते वे भी भाग जाने के लिए व चोरको मारने को भी कोई मुहुर्त देखता नहीं व सती ज्यो पतिके साथ जलने जाती। उसके जलने जाने के कोई भी नियम व समय नहीं व वह सती होनेके मुहुर्त को भी कुछ कारण नहीं और अच्छे या बुरे दिन का भी कुछ कारण नहीं। सतीको तो किसी ने आकर बताया की तेरा पति मरा तो तबही वह पति के साथ हो जाती। रणसे भागकर पिछे घर जाता तो भी मुहुर्त देखता नहीं। तो मुहुर्त या पलका विचार कुछ भी देखता नहीं। ऐसे ही आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जिसका सतगुरुसे व रामनामसे प्रेम लगा है वे जगत की लाज या जगतकी मर्यादा कुछ भी देखते नहीं।।१५।।

|| साखी ||

सुखराम आद घर पहुँचिया, ता दिन आ बिध होय ।
ध्यान लग्यो बाणी कहें, साँसो रहयो न कोय ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जिस दिन संत आदि घर जाकर पहूँचता उस दिन उसका ध्यान साहेबसे लग जाता और वे साहेबकी वाणी बताने लगते है । उनको माया के साधू जैसा काल छुटा की नही ऐसा जरासा भी शंका रहती नहीं। काल छुटने की फिकीर कुछ भी रहती नहीं।।१६।।

|| इति प्रेमभक्ति को अंग सम्पूर्ण ||